हर्टाग कमेटी 1927—29

डॉ0 रत्नर्त्तुः मिश्रा
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग,
सी0एस0जे0एम0 विश्वविद्यालय, कानपुर

गठन

1927 में साइमन कमीशन द्वारा एक सहायक समिति **(Auxiliary Committee)** के रूप में

अध्यक्ष – सर फिलिप हर्टाग (ढाका विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति, कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग, 2017 के पूर्व सदस्य)

प्रतिवेदन

11 सितम्बर, 1929 में प्रस्तुत

प्राथमिक शिक्षा –

अपव्यय तथा अवरोधन (**wastage and Stagnation**) की समस्या पर विशेष बल

अपव्यय – प्राथमिक शिक्षा की समाप्ति से पूर्व विद्यालय छोड़ना

अवरोधन – विद्यार्थी का एक ही कक्षा में एक वर्ष से अधिक समय तक बने रहना

अपव्यय तथा अवरोधन के कारण –

- प्राथमिक विद्यालयों का अभाव
- पाठ्यक्रम का जीवन से सम्बन्धित न होना
- अमनोवैज्ञानिक शिक्षण विधियाँ
- शिक्षण सामग्री का अभाव
- अप्रशिक्षित शिक्षक
- महिला शिक्षिकाओं की कमी
- अधिकांश प्राथमिक विद्यालयों का एकल शिक्षक होना
- माता–पिता की अशिक्षा
- निर्धनता

अपव्यय तथा अवरोधन रोकने हेतु सुझाव–

- प्राथमिक शिक्षा की स्थानीय निकायों पर पूर्ण निर्भरता में कमी लायी जाये
- प्राथमिक विद्यालयों के निरीक्षकों की संख्या में वृद्धि
- प्राथमिक शिक्षा की न्यूनतम अवधि चार वर्ष की जाये
- योग्य तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति
- सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था
- शिक्षकों के वेतन में वृद्धि की जाये
- पाठ्यक्रम में जीवनोपयोगी विषयों को महत्व

माध्यमिक शिक्षा –

माध्यमिक शिक्षा की समस्यायें

1. माध्यमिक शिक्षा का परीक्षा प्रधान
2. माध्यमिक शिक्षा में विद्यार्थियों की एक बड़ी संख्या का उत्तीर्ण न होना

माध्यमिक शिक्षा की समस्याओं के कारण–

- माध्यमिक विद्यालयों का निम्न स्तर
- विद्यार्थियों को उदारता के साथ प्रोत्तीर्ण किया जाना
- माध्यमिक शिक्षा का प्रसार
- योग्य तथा प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव
- उच्च्व शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव

माध्यमिक शिक्षा हेतु सुझाव –

- ❑ पाठ्यक्रम में जीवनोपयोगी विषयों को महत्व
- ❑ व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा पर बल
- ❑ विद्यार्थियों को विषय चयन हेतु स्वतन्त्रता दी जाये।
- ❑ मिडिल स्तर के विद्यार्थियों की सार्वजनिक परीक्षा ली जाये।
- ❑ योग्य तथा प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति
- ❑ सेवारत शिक्षकों के प्रशिक्षण (अभिनव पाठ्यक्रम द्वारा) की व्यवस्था
- ❑ शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति तथा वेतन में वृद्धि की जाये

उच्च शिक्षा –

उच्च शिक्षा की समस्याओं के कारण–

- विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में समुचित ताल मेल का अभाव
- अव्यावहारिक पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम मूलतः सैद्धान्तिक होना
- कोर्सेज का समुचित संचालन न होना
- पुस्तकालयों की समुचित व्यवस्था न होना
- छात्र च
- छात्र संख्या का निर्धारित मानकों से अधिक होना

उच्च शिक्षा हेतु सुझाव –

- कुछ विश्वविद्यालयों को शिक्षण तथा शोध केन्द्रों के रूप में विकसित किया जाये।
- आनर्स कोर्स संचालित किये जायें
- पुस्तकालयों की समुचित व्यवस्था
- प्रयोगशालाओं की समुचित व्यवस्था
- शोधकार्य को विशेष प्रोत्साहन दिया जाये
- उच्च शिक्षा को रोजगारपरक बनाया जाये
- व्यावसायिक तथा तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये
- केवल योग्य छात्रों को प्रवेश
- योग्य प्राध्यापकों की नियुक्ति, नियुक्ति का दायित्व विश्वविद्यालय पर
- छात्र सहायता हेतु रोजगार कार्यालयों की स्थापना

धन्यवाद